RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 5 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 7 जुलाई 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

जलमग्न शहर और अतिक्रमण को लेकर डण्डा

बोल्डर मलबा गिरने से सड़कें बन्द और नदी उफान पर

बरसात के रोड़े और हरेले का मौसम

कार्यालय प्रतिनिधि

यमुनोत्री पैदल मार्ग पर जानकीचट्टी के पास भारी मलबा

नन्दप्रयाग के थिरपाक में नाले का कहर, चोपता मार्ग अवरुद्ध

मुनस्यारी-मिलम मार्ग में पुल न होने से कटा हुआ है जोहार

भवाली-अल्मोड़ा मार्ग पर क्वारब के पास खतरा बना हुआ है

कपकोट-पिण्डारी, हरसीला-रीमा सहित कई मार्गों पर दिक्कत

बरसात के रोड़े में हरेला का मौसम आ चुका है। उत्तराखण्ड में प्रमुख सड़कें बोल्डर मलबा गिरने से दिक्कतदार बनी हुई हैं जबकि नदियां उफान पर हैं। इस बार बरसात की शुरूआत से ही कई हादसे हो चुके हैं। वाहन के गिरने, दीवार ढहने, मलबे में दबने, बोल्डर आने से हुई मौत की घटनाएं हुई हैं। तराई क्षेत्र में जलमग्न शहरों पर अतिक्रमण पर प्रशासन ने डण्डा चलाया है ताकि पानी को निकासी का रास्ता मिले।

पहाड़ का 'हरेला' त्यौहार के लिये सारी तैयारी है और विद्यालयों को खुलने से चलह-पहल है लेकिन मूसलाधार बरसात में सभी से सावधानी के साथ आवागमन को कहा गया है। पर्वतीय मार्गों पर मची आफत को देखते हुए यात्रियों को अलर्ट किया गया है।

यमुनोत्री पैदल मार्ग पर भूस्खलन से दिक्कत हो रही है। जानकीचट्टी के पैदल मार्ग पर भारी भूस्खलन होने से हादसा हो चुका है। मूसलाधार बरसात से रुद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड हाईवे पर सोनप्रयाग के समीप भूस्खलन से केदारनाथ यात्रा के संचालन में रुकावट हुई। ऐसे में गौरीकुण्ड में केदारनाथ तक पैदल मार्ग पर सम्वेदनशील स्थानों पर यात्रियों को जवानों की मौजूदगी में रास्ता पार करवाया गया। नन्दप्रयाग के थिरपाक गाँव में बहने वाले बरसाती नाले से कई मवेशियों के मलबे में दबने से मौत हो गई। विकराल बारिश के साथ मलबा घरों और खेतों में भर चुका है। गोपेश्वर-मण्डल

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

एकलव्य : आम आदमी के जरिए एक खास सन्देश

सूर्यकान्त बाली

एकलव्य के बारे में देश को कहानियों, परम्पराओं व जनुश्रुतियों के जरिए जितना मालूम है, उसका अधिकांश महाभारत में दर्ज है। आप किसी बच्चे के सामने भी एकलव्य का नाम ले देंगे तो वह एकलव्य के प्रति बड़े आदर और सम्मान के भाव से बता देगा कि वह एक भील बालक था। महाभारत के मुताबिक वह निषादराज हिरण्यधनु का पुत्र था- ततो निषादराजस्य हिरण्यधनुषः सुतः एकलव्यः (महाभारत, आदिपर्व 131.31)। ऐसा लगता है कि पुराने जमाने में निषादों का, जो भील भी थे और मछली पालन तथा नौकायन का काम भी करते थे, अपना व्यावसायिक और राजनीतिक संगठन काफी मजबूत था और उसे बाकायदा राजकीय मान्यता हासिल थी। राम के समय निषादराज गुह की भूमिका से हम सभी सुपरिचित हैं कि कैसे उसने एक बार राम के पक्ष में भरत से लड़ने का मन बना लिया था, पर जब भरत के बारे में वास्तविकता मालूम पड़ी तो उसे बड़ा हर्ष हुआ। शान्तनु की पत्नी सत्यावती के पिता दाश का परिचय भी हमें निषादराज के रूप में ही करवाया जाता है। एकलव्य के पिता भी निषादराज थे।

द्रुपद से अपमानित और पीड़ित द्रोण जब घूमते-घूमते हस्तिनापुर पहुँचे और परिस्थितियों के चमत्कार से वे कुरु राजकुमारों यानी पाण्डवों और कौरवों को शस्त्रविद्या सिखाने के लिए राजकुल द्वारा नियुक्त कर लिए गए तो उनकी ख्याति सुनकर अन्य अनेक शिष्यताकामी युवाओं की तरह एकलव्य भी धनुर्विद्याा सीखेने के इरादे से उनके पास गए। शिष्यत्व चाह। पर द्रोण ने एकलव्य को इस बिना पर सिखाने से मना दिया कि वे केवल कुरु राजकुमारों को ही धनुर्विद्या सिखा रहे हैं, इसलिए एक नैषादि यानी भील बालक को कैसे अपना शिष्यत्व प्रदान कर दें?- न स तं प्रतिजग्राह नैशादिरिति चिन्तयन्। शिष्यं धनुष धर्मज्ञः तेषामेवान्वक्षया।' (आदिपर्व 131.32)

बस यहीं से एकलव्य का चरित्र जो उभरना शुरू होता है तो वह उभरता ही जाता है। एकलव्य निराश नहीं हुआ। उसने द्रोण को मन ही मन अपना गुरु धारण कर लिया था और अपने इस भाव से वह डिगना भी नहीं चाहता था। इसलिए उसने द्रोण की मिट्टी की प्रतिमा बनाई- कृत्व द्रोणं महीमयम् (आदिपर्व 131.32) और उसी प्रतिमा में गुरु द्रोण के साक्षात दर्शन कर उनकी देखरेख में या निर्देशन में धनुर्विद्या का अभ्यास करने लगा और अभ्यास करते-करते अपनी विद्या का परम विशेषज्ञ जैसा हो गया।

यही परमविशेषता एकलव्य की मानो दुश्मन बन गई। जो हुआ, वह कथा भी हम सब को मालूम है, पर फिर से बताने में कोई हर्ज नहीं। एक बार द्रोणाचार्य अर्जुन सहित अपने शिष्यों के साथ वन में घूम रहे थे। एक कुत्ता उनके पास आया जिसके मुँह में सात बाण इस कुशलता से मारे गए थे कि वह घायल तो नहीं हुआ, पर उसका भूँकना रुक गया। अर्जुन यह देख लजा गया कि इस धरती पर एक ऐसा धनुर्धन भी है जिसने कुत्ते के मुँह को इस तरह बींध दिया कि जिस तरह वह भी शायद न बींध पाए। उधर, द्रोण ने अपने शिष्य अर्जुन से मानो प्रतिज्ञा जैसी कर रखी थी कि वे उसे धनुर्विद्या में ऐसा विशिष्ट बना देंगे कि उस जैसा और कोई धनुर्धर इस पृथ्वी पर नहीं होगा। पर बिंधे मुँह वाले कुत्ते को देखकर अर्जुन को साफ आभास हो गया कि उससे बढ़कर न सही पर उस जैसा एक और अनुर्धारी भी इस धरती पर है। सो द्रोण ने अपने शिष्यों के साथ तलाश शुरू की और जल्दी ही उन सबकी मुलाकात एकलव्य से हो गई। उसके बाद जो घटना वह मानवीय गरिमा और मानवीय करुणा के लिए सचमुच विदारक है। द्रोण ने परिचय पूछा तो जानते हैं एकलव्य ने क्या कहा? 'मैं द्रोण का शिष्य हूँ- द्रोणशिष्यं तु मां विद्धि (आदिपर्व 131.45)। इससे बढ़कर गुरुभक्ति क्या हो सकती है? पर अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनाने की अपनी प्रतिज्ञा या घोषित इच्छा के मोह के कारण द्रोण इतने कमजोर हो चुके थे कि वे सहसा क्रूरता पर उतर आए। गुरु होने के नाते इस स्वतःस्फूर्त और विशेषज्ञ धनुर्धारी एकलव्य को हृदय से लगाकर आशीर्वाद देने के बजाए उन्होंने उससे निर्मम गुरुदक्षिणा माँग ली। यहाँ आकर तो स्वयं महाभारतकार भी द्रोण का उपहास करने से नहीं चूकते। द्रोण ने एकलव्य से जो दुर्व्यवहार किया वह एक गुरु का नहीं, किसी स्वार्थी राजकर्मचारी का ही हो सकता था। इस लिए द्रोण ने एकलव्य से गुरुदक्षिणा के रूप में जो माँगा उसे महाभारतकार ने गुरुदक्षिणा नहीं वेतन कहा है- यदि शिष्योसि मे वीर वेतनं दीयतांमिति (आदिपर्व 131.54) यानी हे वीर, अगर मेरे शिष्य हो तो मेरा वेतन भी दो। एकलव्य के हर्ष का पारावार नहीं। उसे उस गरु ने अपना शिष्य मान लिया था जिसने कभी उसे शिष्यत्व देने से इनकार कर दिया था पर जिसकी मिट्टी की मूर्ति को गरु धारण कर उसने सारी विद्या सीखी थी। वह दक्षिा देने को उतावला हो गया तो द्रोण ने वह माँगा जो माँगने के कारण अन्यथा

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

कैसे कैसे आपातकाल

पचास वर्ष पूर्व तत्कालीन प्रधानमंत्री ने देश में जिस प्रकार का आपातकाल लगाया उसकी पचासवी बरसी पर आयोजन करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि कोई भी भारतीय कभी नहीं भूलेगा कि आपातकाल के दौरान किस तरह संविधान की भावना का उल्लंघन किया गया। कांग्रेस सरकार ने लोकतंत्र को बेड़ियों में जकड़ा।

इसी प्रकार के अन्य आयोजनों में भी तीखे सुर देखे गये। केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि आपातकाल की यादों को जीवित रखा जाना चाहिए ताकि कोई भी देश पर तानाशाही विचार न थोप सके। आपातकाल के दौरान देशवासियों ने जो पीड़ा सही, उसे नयी पीढ़ी जान सके, इसी उद्देश्य से मोदी सरकार ने इस दिन को संविधान हत्या दिवस का नाम दिया है।

सरकार और पार्टी स्तर पर हुए कार्यक्रमों में वक्ताओं ने अपने विचार रखे और उसके घेरे में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इन्दिरा गांधी व कांग्रेस पार्टी रही। इसके साथ ही सवाल उठना स्वाभाविक है कि जब एक ने आपातकाल लगाया तो दूसरा उसे याद कर क्या पाठ पढ़ा रहा है? कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने प्रधानमंत्री मोदी द्वारा आपातकाल को लेकर किये गये प्रहार पर पलटवार करते हुए कहा- 'पिछले 11 साल से देश में अघोषित आपातकाल है और भाजपा मोदी सरकार की विफलताएं छिपा रही है।'

असल में दुनियाभर के देशों में अलग-अलग समय पर कई प्रकार से आपातकाल लगता रहा है और इसका प्रभाव वहाँ की प्रजा पर सीधे होता है। दुनिया में होने वाले युद्धों और राजाओं की मनमानी के किस्से भी प्रजा के लिये आपातकाल को बताते हैं। आज भी दुनिया के बड़े देशों से लेकर कई देशों में वहाँ के शासक जिस प्रकार के नियम लागू कर अपनी मनमानी करते हैं वह सब भी आपातकाल ही है। किस-किस को कैसे याद करें?

बात भारत की हो रही है तो वह इसलिए कि दुनिया के सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देश में एक आपातकाल इन्दिरा गांधी ने भी लगाया। 25 जून 1975 को देशव्यापी इमरजेंसी में इतना भय था कि न जनता सड़क पर उतरी न मीडिया ने लोकतंत्र की रक्षा में कोई हिम्मत जुटाई। वह एक समय था जब इन्दिरा ने अपनी ताकत दिखाई और आज एक समय है जब फिर से ताकत दिखाई जा रही है। मोदी सरकार के निर्णय देश में लागू होते हैं और कोई उसका विरोध नहीं कर सकता, इसकी चर्चा कम नहीं है। तो क्या इसे भी एक प्रकार का आपातकाल मान लिया जाए? दरअसल जब-जब सत्ता संभाल रहे मुखियाओं को लगता है कि उन्हें किस प्रकार से हालातों को काबू में लाना है वह अपना और अपने सलाहकारों का ही विवेक लगाते हैं। ऐसे में आपातकाल को समझना जरूरी है कि उससे कौन प्रभावित हुआ।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

शुभांशु का अंतरिक्ष में प्रवास

नई दिल्ली। भारतीय अन्तरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला ने अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन के लिये सफल उड़ान भरने के साथ ही इतिहास रचा। 41 साल बाद अन्तरिक्ष में भारती की ओर से यह कदम है। इससे पहले 1984 में राकेश शर्मा रूसी अन्तरिक्ष यान सोयूज के द्वारा अन्तरिक्ष में गये थे। शुभांशु 14 दिन अन्तरिक्ष में प्रवास के दौरान प्रयोग कर रहे हैं।

बांग्लादेश पूर्व चुनाव आयुक्त गिरफ्तार

ढाका। बांग्लादेश के पूर्व चुनाव आयुक्त नुरुल हुद को ढाका पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। 2017 से 2022 तक चुनाव आयुक्त रहे नुरुल पर देश में हुए आम चुनाव में धांधली का आरोप है। पुलिस पकड़ के दौरान भीड़ ने उन्हें घेरकर जूतों से पीटा और जुलूस निकाला।

सीबीएसई बोर्ड परीक्षा दो बार होगी

नई दिल्ली। शैक्षणिक सत्र 2025-26 में दसवीं कक्षा की पढ़ाई कर रहे छात्रों को दो बार बोर्ड परीक्षा देने का अवसर मिलेगा। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पहली मुख्य परीक्षा परम्परागत रूप से फरवरी के मध्य में होगी, जबकि दूसरी बोर्ड परीक्षा मई में कराई जाएगी जो वैकल्पिक होगी। सभी विद्यार्थियों के लिए पहली मुख्य बोर्ड परीक्षा में शामिल होना अनिवार्य होगा।

ढाका में दुर्गा मंदिर गिराया, निन्दा की

नई दिल्ली। ढाका के खिलखेत में दुर्गा मन्दिर ध्वस्त करने पर भारत ने मो. युनूस के नेतृत्व वाली सरकार की कड़ी निन्दा की। भारतीय विदेश विभाग ने कहा कि मन्दिर की सुरक्षा के बजाय अवैध भूमि उपयोग का मामला बताकर मन्दिर ढहाने का बांग्लादेश सरकार का फैसला निराशाजनक है। विदेश मंत्रालय प्रवक्ता रणवीर जायसवाल ने कहा मन्दिर ढहाने के कारण यहाँ काफी क्षति हुई है। जबकि हिन्दू धर्मस्थलों की रक्षा अन्तरिम सरकार की जिम्मेदारी है।

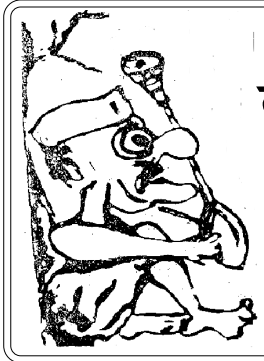

फसक

दाज्यू, चुनाव की फरफराट और ही होने वाली ठैरी

इधर-उधर फौंक मारकर तरबतर करते रहते हैं बल

दाज्यू, कोर्ट ने भले ही सरकार को पूरी तैयारी के साथ चुनाव कराने की बात करते हुए रोक लगा दी हो लेकिन अपना जमन प्रधान बनने के लिये कमर कस चुका है। चुनाव की फरफराट और ही होने वाली ठैरी। भिक्कू जब प्रधानपति बनकर लाइन मिला देने की बात कर सकता है तो जमन प्रधान बनकर तो बहुत कुछ करेगा। वैसे भी दाज्यू जमाना गजब हो गया है। इधर-उधर की फौंक मारकर तरबतर करते रहते हैं बल। पार मोहल्ले वाला ललिया जोगी फेसबुक में ढूंढ-ढूंढकर जन्मदिन की मुबारक और भरपूर लोगों के साथ घुसकर फोटो चेपने में नरभक्षी से कम नहीं है।

दाज्यू, दिखने-दिखाने का अपना मजा ठैरा। पेट के अन्दर आंतों और गुर्दे कलेजी का हाल क्या है कौन बता सकता है? सामने जो मुंह दिखाई दे और चौड़ाई लम्बाई दिखाई दे वही सब माया का खेल है। मोह में फंसकर बिजली देवी ने अपनी तनख्वाह लुटा दी बल। टीले वाले कालेज में भालू के डर से सुगम में जुगाड़ लगाया और फिर पटरी पार वाले कालेज में नरपिचाश की गिरफ्त में खून की प्यासी हो गई। सुरताल सिंह ने त्यौहार की आड़ में पकौड़े खिलाने शुरू कर दिये लेकिन रात्रि विचरण के कारण उसे निसाचर की संज्ञा दे डाली और नरपिचाश बने प्रोफेसर बलुरुवा के साथ मटन-चिकन का स्वाद लेने लगी। इस बीच सुरताल सिंह मारीच की तरह हीरन बनकर मण्डी इलाके में घूमने लगा। उसके पड़ोस में मोनू लाल खून के प्यासे की तरह टहलने लगा। दाज्यू, फौंक मारते-मारते मोनू लाल ने लीलावती का हाथ पकड़ लिया और रहीम के दोहे सुना रहा है।

हम तो पहले से ही कबीर, तुलसी, रहीम, मीरा के पद सुनना-सुनाना पसन्द करते हैं और चाहते हैं कि चुनाव में खड़े होने वाले भी अनावश्यक खर्चा करना छोड़ कबीर की वाणी पर विचार करें। लेकिन दाज्यू, फौंक मारने वालों की भीड़ में कबीर की कौन सुनेगा? उधड़े-भुदड़े पहनकर लप्पू झप्पू नाच सर चढ़ कर बोल रहा ठैरा। कबीर तो बुढ़ापे में याद आता है बल।

दाज्यू, शिक्षा मंत्री धन दा बलियानाला क्षेत्र में चल रहे ट्रीटमेंट कार्य का निरीक्षण देखने पहुँचे तो मनदा और भुवनदा खौल गये। बोले- 'नाली और नालों से ज्यादा आपदा तो शिक्षा विभाग में आ चुकी है। उसका निरीक्षण होना चाहिये।'

दाज्यू, श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय में राज्य के 17 ऐसे संस्थानों को के प्रवेश और परीक्षा परिणामों पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है बल जिन्होंने पिछले कई सालों से विश्वविद्यालय की सम्बद्धता के लिए आवेदन नहीं किया। दाज्यू, ढूंढने पर और जगह भी मिलेंगे ऐसे मामले। मग्गू कह रहा था- 'कौन पूछने वाला है, सम्बद्धता। चला चली का खेला हो रहा है सब। जब आँख खुली तभी सवेरा।' अब देखो जरा, एनएच 74 के घोटाले का जिन्न फिर उठ खड़ा हुआ है। कई अफसरों के घरों पर ईडी का छापा और दस्तावेज जब्त होने से हड़कम्प है। दाज्यू, कोटाबाग में भाजपा नेता के बेटे ने जहर खाकर जान दे डाली। नेता का आरोप है कि सिपाही ने थप्पड़ मारा तो क्षुब्ध होकर बेटे ने जानलेवा कदम उठाया। दाज्यू, दुनिया बहुत तेजी से भाग रही है। स्वास्थ्य का ध्यान रखना।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

बरसात के रोड़े.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

चोपता मार्ग बैरागना के पास पहाड़ी से मलबा आने के कारण अवरुद्ध है। बदरीनाथ राजमार्ग पर बोल्डर गिरने से खतरा हो रहा है।

सीमान्त क्षेत्र में बरसात से आफत मची है। मुनस्यारी मिलम धापा में पुल टूट होने से कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। भूस्खलन से जगह-जगह दिक्कत है। ऐसे में 14 राजस्व ग्रामों के अलावा सीमा सुरक्षा कर्मियों के लिये सामाग्री पहुँचाना कठिन हो रहा है। मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने सीमा सड़क संगठन 1447 बीसीसी से रोड सम्पर्क दुरुस्त करने की मांग की है। आदिचौरा हूनेरा सड़क के बन्द होने से लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बंगापानी तहसील मुख्यालय के मुख्य बाजार में पहाड़ी से बोल्डर गिरने दवानी निवासी जयपाल सिंह रावत की दुकान क्षतिग्रस्त हो गई। बोल्डर तड़के गिरा अन्यथा बहुत ज्यादा नुकसान हो सकता था। दारमा घाटी, चैंदास, व्यास घाटी भी मलबा-बोल्डर गिरने के बाद से प्रभावित हैं। चीन सीमा को जोड़ने वाली धारचूला -तवाघाट सड़क बन्द मलबा आने से बन्द है।

भवाली-अल्मोड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग पर क्वारब में खतरा बना हुआ है। इस मार्ग पर पहले भी कई बार भूस्खलन हो चुका है। रामगढ़ के पास भी बोल्डर गिरने से यातायात प्रभावित हुआ है।

बागेश्वर जिले में बरसात ने अपना रौद्र रूप दिखाया। यहाँ सरयू का उफान इतना जबर्दस्त उठा कि नदी किनारे रह रहे लोगों के घरों में पानी भर गया। कपकोट क्षेत्र में भूस्खलन से ज्यादा परेशानी हो रही है। मलबा गिरने से कपकोट-कर्मी,

सोनप्रयाग के समीप भूस्खलन से केदारनाथ यात्रा में रुकावट

हल्द्वानी-चोरगलिया मार्ग पर शेरनाला में बहुत ही सावधानी

कई हादसे हो चुके हैं इस बार

हरसीला रीमा, उतरौड़ा-लीली, पोलिंग-गैरखेत, बदियाकोट-बोरबलड़ा, बदियाकोट- कुंवारी, चीराबगड़-पोथिंग, कपकोट-पिण्डारी ग्लेशियर बागेश्वर-कपकोट, खड़लेख- भनार में यातायात व्यवधान हो रहा है।

हल्द्वानी-चोरगलिया मार्ग पर शेरनाला में बहुत ही सावधानी से यात्रा करनी है क्योंकि इस बरसाती नाले पर पर भयंकर बाढ़ आने से बार-बार खतरा बना हुआ है। बरसात में इस मार्ग से जाने वालों को आगाह किया गया है कि जब रास्ता खुला हो तभी यात्रा करें, नाले में पानी होने पर वाहन न निकालें क्योंकि इसकी बाढ़ में हमेशा खतरा रहता है। इस जानलेवा नाले में जबरन वाहन उतारने वालों का चालान भी किया गया है।

खटीमा में भारी बरसात में हुए हादसे में एक 8 वर्षीय मासूम की मौत हो गई। खेत पर धान की रोपाई कर रहे नारायण सिंह के परिवार के ऊपर खेत से लगी दीवार गिर पड़ी जिसमें मासूम शिवांगी की मृत्यु हुई।

चम्पावत जिले के पूर्णागिरी मार्ग में लगे उचौलीगोठ में इस बार भी शारदा नदी से हो रहे भूकटाव से गाँव को खतरा उत्पन्न हो गया है। इस सम्बन्ध में सामाजिक कार्यकर्ता आनन्द सिंह महर के नेतृत्व में ग्रामीणों ने पूर्णागिरी क्षेत्र के निरीक्षण को आए डीएम मनीष कुमार के माध्यम से प्रदेश के वन एवं पर्यावरण मंत्री के नाम सम्बोधित ज्ञापन दिया और कहा कि हर वर्ष बरसात के समय पूर्णागिरी मार्ग के बाटनागाड़ के ऊपर पहाड़ी पर भूगर्भीय हलचल होने से पहाड़ दरकने के साथ-साथ टूट भी रहा है, जिससे खतरा बढ़ता जा रहा है।

मूसलाधार बर्षात से तराई में जलभराव की समस्या बनी हुई है। सितारगंज, खटीमा, किच्छा, बाजपुर, काशीपुर, जसपुर में पानी मोहल्लों तक है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चिन्ता

देहरादून की हवाओं में घुरा रहा जहर!

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून हमेशा से अपने मौसम के लिए जानी जाती है। यहाँ का मौसम कुछ ऐसा है कि जरा सी गर्मी पड़ते ही बारिश लोगों को राहत दे देती है। देहरादून के राजपुर रोड से मसूरी की तरफ जाने वाली सड़क हो या फिर घण्टाघर से जौलीग्रांट एयरपोर्ट की तरफ जाने वाले मार्ग, शहर का हर कोना हरा भरा होने की वजह से भी यहाँ वायु प्रदूषण बेहद कम रहता है। यही कारण है कि जो भी देहरादून आता है वह यहाँ के मौसम को भूल नहीं पता, मगर बीते कुछ सालों से बाहर से आने वाली गाड़ियों की वजह से देहरादून की आबोहवा जहरीली हो रही है।

यहाँ की सुकून देने वाली गलियां, शान्त वादियाँ साफ सुथरी हवा हर किसी को पसन्द आती हैं, मगर जिस तरह से राजधानी देहरादून में रोजाना सड़कों पर लम्बे-लम्बे जाम लग रहे हैं वह हर किसी को परेशान करने वाला है। मसूरी और गंगोत्री यमुनोत्री जाने वाली गाड़ियों को शहर से निकाला जा रहा है, उससे देहरादून में वायु प्रदूषण लगातार बढ़ रहा है। निर्माण कार्य और सड़कों पर अधिक गाड़ियों के दौड़ने से भी प्रदूषण बढ़ता है। कारखाने भी इसकी एक बड़ी वजह होते हैं। इससे सांस लेने में तकलीफ, खांसी, जुखाम और अस्थमा जैसी बीमारी होती है। कार्बन मोनोआक्साइड एक बिना रंग और गन्ध वाली जहरीली गैस होती है। अब सवाल आता है की ये कहाँ से आती है। इसको भी सरल भाषा में ऐसे समझा जा सकता है- ये पेट्रोल, डीजल, घर की रसोई में गर्म होने वाला तेल भी इसकी वजह है।

इसके साथ ही धुएं से अधजली वस्तुओं और अन्य कई कारणों से पैदा होती है। ये भी शरीर के लिए बेहद हानिकारक है। इससे अधिकांश खून में और शरीर में कई तरह की समस्या आ सकती है। लगातार बढ़ते वायु प्रदूषण से न केवल शहर की आबोहवा खराब हो रही है बल्कि लोगों की सेहत पर भी इसका बेहद दुष्प्रभाव पड़ रहा है। राज्य का परिवहन विभाग वायु प्रदूषण फैलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई कर रहा है। अधिक संख्या में रोजाना दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और देश के अन्य हिस्सों से यहाँ पर गाड़ियां आ रही हैं, सबकी चैकिंग करना शायद सम्भव नहीं है लेकिन फिर भी परिवहन विभाग काम में लगा है। आंकड़ों के हिसाब से वायु प्रदूषण फैलाने वाले 650 से अधिक वाहनों को पकड़कर उनके ऊपर कार्रवाई की गई है। इस कार्रवाई के तहत 2 करोड़ रुपए जुर्माना भी वसूला गया है।

देहरादून आरटीओ कहते हैं राजधानी में दाखिल होने वाले वाहनों को चेक किया जाता है। लगातार प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों के खिलाफ कार्रवाई करते हैं। उन्होंने कहा शहर की आबोहवा साफ रहे ये सभी की जिम्मेदारी है। आंकड़ों के हिसाब से वायु प्रदूषण फैलाने वाले 650 से अधिक वाहनों को पकड़कर उनके ऊपर कार्रवाग्र की गई है।

हाल

ही में आई एक रिपोर्ट में बताया गया है कि कैसे दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस ने कनेक्टिविटी में से लोगों का देहरादून पहुँचना आसान हुआ है, जिससे वीकेंड में पर्यटकों की संख्या में बढ़ोत्तरी देखी जा रही है। राज्य में सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था की कमी के कारण निवासियों और आगन्तुकों को निजी वाहनों पर निर्भर रहना पड़ता है, जिससे प्रदूषण का बोझ और भी बढ़ जाता है। उत्तराखण्ड के लिए पर्यटन एक दोधारी तलवार बना हुआ है। यह स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है लेकिन इससे सालाना लाखों टन ठोस कचरा भी जमा होता है, जो जल संसाधनों पर दबाव डालता है और बाढ़, भूस्खलन और बढ़ते तापमान जैसी जलवायु सम्बन्धी समस्याओं को बढ़ाता है।

कुछ महीनों की रिसर्च में पता चला है कि छुट्टियों के दौरान दून में वाहनों की संख्या बढ़ने से वायु प्रदूषण का स्तर पहले की अपेक्षा बढ़ गया है। वीकेंड में शामिल शनिवार और रविवार को तो प्रदूषण सप्ताह के अन्य दिनों का रिकार्ड तोड़ देता है। पहाड़ों की रानी मसूरी का एयर क्वालिटी इंडेक्स बीते दिन 118 रहा, जिससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि गाड़ियों की बढ़ती आवाजाही की वजह से वादियों की फिजायें ज़हरीली होने लगी हैं। राज्य सरकार ने इकोटूरिज्म को एक स्थायी विकल्प के रूप में बढ़ावा दिया है। हरियाली के नुकसान, विशेष रूप से सड़क चौड़ीकरण और रियल एस्टेट विकास के कारण शहर में प्रदूषण पहले की अपेक्षा ज्यादा खतरनाक स्तर पर पहुँच गया है।

नुकसान को कम करने के लिए देहरादून को एक बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है। सार्वजनिक परिवहन में निवेश, बेहतर यातायात प्रबन्धन और जन जागरूकता अभियान के साथ ही शहर में ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन को भी लागू करना चाहिए और पर्यटन सीजन के दौरान सम्वेदनशील क्षेत्रें में वाहनों की पहुँच को सीमित करना चाहिए।

आपके पत्र

अन्य प्रदेशों की भांति उत्तराखण्ड में मेट्रो ट्रेन का संचालन हो

हमारे भारत देश में काफी रेल लाइनों का विस्तार हो गया है तथा आगे भी रेल लाइन का विस्तार होने की योजनाएं प्रस्तावित हैं। यहाँ तक कि जम्मू कश्मीर में भी रेल लाइनों का विस्तार हो चुका है। इसके अतिरिक्त कई प्रदेशों में मेट्रो रेल भी संचालित हो रही है जिससे सड़क यातायात का भार कम होता जा रहा है। इसी प्रकार यदि उत्तराखण्ड में भी मेट्रो ट्रेनों का संचालन किया जाता है तो पर्यटन विकास में काफी वृद्धि होगी।

1. देहरादून से गैरसैण तक मेट्रो रेल की लाइन बिछाई जाये क्योंकि देहरादून उत्तराखण्ड की राजधानी है और गैरसैंण ग्रीष्मकालीन राजधानी है तथा गैरसैंण में कभी कभी विधानसभा सत्र भी संचालित होते रहते हैं। इससे उत्तराखण्ड मंत्रीमण्डल व विधायकों को मेट्रो रेल से गैरसैंण जाने में सुविधा होगी तथा इस बीच पर्यटन विकास को भी लाभ मिलेगा। चक्का जाम की स्थिति भी कम हो जायेगी जिससे पर्यटकों का रुख इस ओर होगा।

2. इसी प्रकार रुद्रपुर से हल्द्वानी होते हुए नैनीताल तक के लिये मेट्रो रेल संचालित होने पर नैनीताल जैसे पर्यटक स्थलों में सड़क यातायात की भीड़ कम हो जायेगी। चक्का जाम की स्थिति भी कम हो जायेगी और पर्यटन के विकास में वृद्धि हो जायेगी।

3. टनकपुर रेलवे हेड से बीच में सभी रेल हेड को मिलाते हुए देहरादून मेट्रो लाइन बिछाने से सफर के अवसर बढ़ जाएंगे और बची का सफर आसान हो जायेगा। जैसे टनकपुर-काठगोदाम-रामनगर कोटद्वार-देहरादून में मिलने से एक नई मेट्रो लाइन बन जाती है तो इनके बीच यातायात में काफी वृद्धि हो जायेगी।

इसके अलावा अन्य रेलवे लाइनों को बिछाने से मेट्रो ट्रेनों के संचार में वृद्धि हो सकेगी।

आशा है कि केन्द्र सरकार तथा उत्तराखण्ड प्रदेश सरकार इस विषय पर गम्भीरता से विचार करके उपरोक्त मेट्रो ट्रेन योजनाओं का शीघ्र संचालन का कार्य प्रारम्भ करेगी और जिससे पर्यटन विकास में वृद्धि हो सके। पहले उपरोक्त प्रस्तावित स्थलों के जिलये मेट्रो ट्रेन योजना लागू की जाए तथा बाद में सफल हो जाने पर अन्य स्थानों के लिये उक्त मेट्रो ट्रेन संचालन की जाए।

-नन्दा बल्लभ पाण्डे
वरिष्ठ नागरिक
ज्योलीकोट
(नैनीताल)

ज्योतिष की बातें- 236

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का राशि परिवर्तन नहीं हो रहा है। सम्पूर्ण सप्ताह शुक्र स्वराशि वृषभ में, मंगल मित्रराशि सिंह में, सूर्य व शनि समराशि मिथुन व मीन में क्रमशः, बुध व गुरु शत्रुराशि कर्क व मिथुन में क्रमशः तथा चन्द्रमा इस सप्ताह वृश्चिक, धनु, मकर व कुम्भ राशि में गोचर करेगा।

13 जुलाई 2025 को शनि मीन राशि में वक्री हो जाएगा अतः अगले साढ़े चार माह शनि से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल अब प्रबल रूप से प्राप्त होंगे।

गुरु पूर्णिमा- आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा उदयव्यापिनी तिथि में गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। तदनुसार गुरुवार 10 जुलाई 2025 को भगवान विष्णु के अंशावतार कृष्ण द्वैपायन बादरायण भगवान वेदव्यास की जयन्ती मनाई जाएगी। इस दिन भगवान व्यास का पूजन कर उनके द्वारा लिखित ब्रह्मसूत्र आदि किसी ग्रन्थ का पारायण करना चाहिए।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 126

औद्योगिकरण से लाभ या हानि

औद्योगीकरण से पहले एक अकेला व्यक्ति अर्थात् लोहार एक छोटा सा उपकरण अपने कन्धे पर रखकर नदी के किनारे जाकर वहाँ से बालू से लोहा निकालकर बाजार में बेच भी आता था। उस लोहे के गुणवत्ता बहुत अच्छी थी। आजकल का लोहा बिना जंग लगे रह नहीं सकता। पहले किसान स्वयं ही गन्ने से रस निकालकर उस रस से गुड़, खांड आदि बनाकर स्वयं ही बाजार में बेच आते थे। उस गुड़ आदि की गुणवत्ता अतिश्रेष्ठ थी। आजकल गन्ने की मिलों से बनाया गया गुड़ चीनी आदि कोई भी पदार्थ गुणहीन और हानिकारक है। पहले सूत का उत्पादन और फिर वस्त्रें का निर्माण हथकरघे के द्वारा घर-घर में कुटीर उद्योग के रूप में होता था। उन वस्त्रों की गुणवत्ता इतनी अच्छी थी कि सौ, डेढ़ सौ वर्ष पूर्व तक अपने देश से बड़े पैमाने पर यूरोप को साड़ियों व वस्त्रों का निर्यात होता था। और अब कपड़े की मिलों में कपड़े इस प्रकार के बनते हैं कि दो बार धुलने के बाद ही पुराने लगने लगते हैं। पहले के वैद्य स्वयं ही औषधीयों को बनाकर रोगियों के देते थे, तो उन औषधियों की गुणवत्ता उच्चकोटि की रहती थी। जब से औषधियां बड़े पैमाने पर फार्मेसी कारखानों में बनने लगी तब से औषधियों की गुणवत्ता भी लगभग शून्य हो गई है।

यहाँ पर केवल चार ही उदाहरण मैंने दिए हैं। इसी प्रकार का विचार कारखानों, मिलों में उत्पन्न होने वाले घी, दूध, आटा आदि सभी वस्तुओं के बारे में समझना चाहिए। औद्योगीकरण के कारण वस्तुओं की गुणवत्ता में कमी तो आई ही, साथ ही उनमें मिलावट के कारण वे वस्तुएं हानिकारक और स्वास्थ्य के लिए विनाशकारी सिद्ध हो रही हैं। साथ ही सम्पूर्ण कुटीर उद्योग नष्ट हो जाने कारण रोजगारों में भी बहुत कमी आई है।

मेरे विचार से औद्योगीकरण के साथ-साथ उत्पादों की गुणवत्ता और रोजगार के हित में कुटीर उद्योगों का भी विचार करना चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

गंगा व अन्य नदियों के किनारे हटेगा अतिक्रमण, नोडल अधिकारी तैनात

देहरादून। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि गंगा व अन्य नदियों के किनारे अतिक्रमण हटाने के लिए अभियान चलाया जाए। उन्होंने सरकारी भूमि पर अतिक्रमण रोकने के लिऐ मजबूत तन्त्र और अवैध बिक्री रोकने के लिये प्रभावी कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिये।

मुख्यमंत्री आवास पर उच्चस्तरीय बैठक में सीएम ने सरकारी भूमि से अवैध अतिक्रमण को हटाने समीक्षा की। बैठक में प्रमुख सचिव सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे। सीएम ने प्रमुख सचिव को राज्य के मैदानी क्षेत्रों में अतिक्रमण के मामले को देखने के लिये शासन स्तर पर नोडल अधिकारी नियुक्त करने के निर्देश भी दिये हैं।

पहले चरण में 24 जुलाई और द्वितीय चरण में 18 जुलाई को मतदान होगा

उत्तराखण्ड में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव की राज्य निर्वाचन आयोग ने जो अधि सूचना जारी की उसके अनुसार नई तिथि घोषित होते ही सारी तस्वीर साफ हो गई। पहले चरण का मतदान 24 जुलाई और द्वितीय चरण का 28 जुलाई को होगा। 31 जुलाई को मतगणना होगी।

राज्य निर्वाचन की ओर से 21 जून को जारी अधिसूचना के बाद से ही प्रदेश भर में आदर्श आचार संहिता लागू है, हालांकि नैनीताल हाईकोर्ट के आदेश के बाद राज्य निर्वाचन आयोग ने पंचायत चुनाव के कार्यक्रमों में अग्रिम आदेशों तक स्थगित कर दिया था। ऐसे में फिर से राज्य निर्वाचन आयोग ने पंचायत चुनाव के नए चुनावी कार्यक्रम को जारी कर दिया है। हरिद्वार को छोड़ प्रदेश के कुल 66478 पदों पर चुनाव होना है। इसके लिए 8276 मतदान केन्द्र हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

खूपी में खतरा, घर छोड़ने का नोटिस

नैनीताल। मानसून में खूपी गाँव पर खतरा दिखाई दे रहा है। आपदा से बचाव को लेकर प्रशासन ने 17 परिवारों को नोटिस जारी कर 30 सितम्बर 2025 तक सुरक्षित स्थान पर किराए पर मकान लेने को कहा है। भू वैज्ञानिकों ने तोक खूपी के सर्वे में इसे अतिसम्वेदनशील बताया है।

पूर्व दर्जामंत्री खजान ने सुनी समस्याएं

गंगोलीहाट। कांग्रेस के पूर्व दर्जा राज्य मंत्री खजान गुड्डू ने बेलपट्टी के सिनलेख चहज, डूनी का भ्रमण करते हुए जनता की समस्याएं सुनी। क्षेत्रवासियों ने सड़क, शिक्षा, चिकित्सा से जुड़ी समस्याएं बताई। उनके साथ कांग्रेस नगर अध्यक्ष नारायण बोहरा, आनन्द सिंह, ठाकुर सिंह, हयात सिंह, पूरन सिंह सहित कई कार्यकर्ता थे।

भूमिगत बना रकसिया नाला शुरू

हल्द्वानी। यूयूएसडीए ने प्रेमपुर लोशज्ञनी चौराहे से पाण्डे नवाड़ त आरटीओरोड होते हुए रकसिया नाले को भूमिगत करते हुए उसके आउटफॉल निर्माण का कार्य पूरा कर लिया है। कार्यदायी संस्था ने नव निर्माण नाले में रकसिया का बरसाती पानी छोड़ते हुए इसे शुरू किया है। जलभराव देखते हुए इसके भूमिगत करने की मांग पहले से हो रही थी।

रामगंगा पर रुका हुआ है पुल निर्माण कार्य

गंगोलीहाट। आंवलाघाट में रामगंगा नदी पर स्वीकृति के दो साल बाद भी पुल नहीं बन सका है। पहले भूमि धंसाव और अब डीपीआर की स्वीकृति का इन्तजार किया जा रहा है। बताते चलें कि आंवलाघाट होते हुए पिथौरागढ़ और नैनी पव्वाधार तक निर्माण हुआ और गंगोलीहाट से मुख्यालय की दूरी कम करने को पुल बनने का इन्तजार है।

भारी वाहनों का डायवर्जन

अल्मोड़ा। क्वारब पुल के पास लगातार हो रहे भूस्खलन और भूधंसाव को देखते हुए पुलिस ने भारी माल वाहक वाहनों का डायवर्जन प्लान लागू किया है। बागेश्वर, कौसानी, सोमेश्वर से हल्द्वानी को जाने वाले भारी माल वाहक वाहन कोसी से मजखाली वाया रानीखेत होते हुए हल्द्वानी जाएंगे। पिथौरागढ़, धौलछीना, दन्या से हल्द्वानी को जाने वाले भारी माल वाहक वाहन बाड़छीना, दन्या-सुवाखान-लमगड़ा वाया शहरफाटक होते हुए चलेंगे।

हर जिले में नोडल खंड बाढ़ नियंत्रण कक्ष

मानसून सीजन में सिंचाई विभाग ने प्रदेश के हर जिले में नोडल खण्ड बाढ़ नियंत्रण कक्ष बनाया है। विभाग ने 304 सम्वेदनशील स्थल चिन्हित किये हैं। सिंचाई मंत्री सतपाल महाराज ने बताया कि केन्द्रीय बाढ़ नियन्त्राण कक्ष का नम्बर 9411554658 है।

हल्द्वानी में नाले वाली जगह से कब्जा हटाने को लेकर प्रशासन सख्त, विधायक बेहद गुस्से में हैं

स्टाम्प पेपरों में सरकारी जमीन की बिक्री

नालों पर हुए अतिक्रमण हटेंगे : गजराज

विकास के नाम पर मत उजाड़ो : सुमित

सहानुभूति पूर्ण विचार किया जाए : भट्ट

हल्द्वानी। मानसून के सर चढ़ते ही प्रशासन सख्त हो चुका है और नाले वाली जगह से कब्जे हटाने के लिये कार्रवाई हो रही है। दूसरी ओर विधायक सुमित हृदयेश का कहना है कि विकास के नाम पर लोगों को मत उजाड़ो। जिन इलाकों में नोटिस भेजे गये हैं उनका निरीक्षण करते हुए विधायक ने प्रशासन पर गुस्सा दिखाया और कहा कि बसाने के बजाय उजाड़ने का काम नहीं होने दिया जायेगा। विधायक ने प्रशासन और भाजपा सरकार पर जबर्दस्त नाराजी दिखाते हुए कहा है कि जिनके 50-60 से मकान बने हैं उन्हें उजाड़ना गलत है। मानवता से ज्यादा कोई प्रशासन नहीं है। जनप्रतिनिधि की तो कोई आवाज ही नहीं रह गई है। देखते हैं कौन उजाड़ता है लोगों को? ऐसी गलती प्रशासन व सरकार न करे।

मेयर गजराज बिष्ट का कहना है कि नालों पर हुए अतिक्रमण तो हटने ही हैं। पानी को उसका रास्ता मिलेगा तभी नुकसान कम होगा और सफाई भी होगी। इस पर कोई राजनीति न की जाए। विधायक की टिप्पणी पर मेयर का कहना है कि वर्षों से बिगड़ व्यवस्था को प्रशासन के साथ मिलकर सुधारा जा रहा है। अकारण किसी को परेशान नहीं किया जा रहा है। प्रशासन को निर्देशित किया गया है कि जिन लोगों को नोटिस दिया गया है उनके कागजात जाँच लिये जाएं। गजराज आगे कहते हैं कि भाजपा के बंशीधर जी के अलावा हमेशा कांग्रेस विधायक हल्द्वानी में रहे हैं उन्होंने क्या किया सब जानते हैं। अब हमारी सरकार है जो अच्छा करने जा रही है। विधायक क्या कह रहे हैं वह जानें।

जलभराव की पिछली घटनाओं को देखते हुए इस बार जिला प्रशासन मानसून से पहले ही सख्त हो चुका था और हल्द्वानी के प्रमुख नालों का सर्वे करते हुए कब्जाई जमीन को खाली करवाने की कार्रवाई की जा रही है। इस बड़ी कार्रवाई में सैकड़ों लोगों पर मकान टूटने का खतरा मंडरा रहा है। परेशान लोगों ने अपनी दिक्कतों को बताया कि किस प्रकार ऋण लेकर उन्होंने अपना आवास बनाया। लेकिन बड़ा सच यह भी देखने को मिल रहा है कि जमीन बेचने के नाम पर ठगी भी हुई है। हल्द्वानी में जमीन लेने की धुन में कई लोग ठगी का शिकार हो चुके हैं। नालों व सरकारी जमीन तक को फर्जी तरीके से बिक्री की बात खुल रही है।

जिलाधिकारी वन्दना सिंह ने कहा कि गलत करने वालों को उसकी सजा मिलेगी। दमुवाढूंगा स्थित सरकारी जमीन स्टाम्प पेपरों में फर्जी तरीके से मलबे के नाम पर बेची गई है। वन भूमि के बाद रसकिया नाले की जमीन भी घेरने की बात कही जा रही है। ऐसे में नाला 60 फुट से घटकर 6 फुट रह गया, जो सभी के लिये खतरा है।

इस बीच सांसद और पूर्व केन्द्रीय मंत्री अजय भट्ट ने हल्द्वानी की विभिन्न क्षेत्रों में अतिक्रमण को लेकर दिए जा रहे नोटिस पर मुख्यमंत्री पुष्कर धामी से मुलाकात कर नोटिस पर तत्काल रोक लगाते हुए सहानुभूति पूर्ण विचार किये जाने की मांग की। उन्होंने सीएम को अवगत कराया कि दमुवाढूंगा, सुभाष नगर, आवास विकास, भगवानपुर आदि क्षेत्रों में लगभग 40-50 सालों से निवास कर रहे अनेक परिवारों को अतिक्रमण सम्बन्धी नोटिस प्राप्त हुए हैं, जिससे उनमें भारी असमंजस और भय का वातावरण है। इन क्षेत्रों में अधिकांश निवासी पर्वतीय जिलों के उच्च पर्वतीय क्षेत्रों से स्थानान्तरित होकर आए हैं। इन नागरिकों ने अपने जीवन की सम्पूर्ण पूंजी लगाकर वैध रूप से भूमि क्रय कर रजिस्ट्री कराकर मकान निर्माण किया है तथा वर्षों से शान्ति व अनुशासन के साथ यहाँ निवास कर रहे हैं।

अब देखना यह है कि त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव और बरसात के इस मौके पर नोटिस पर नोटिस का सिलसिला थमेगा या जलमग्न होते इलाके को देख प्रशासन दौड़ेगा। चुनाव का मौका और वोट.....जमीन लेकर फंस चुके लोगों की पुकार.....नेताओं के बयान..... सरकार का रुख.....प्रशासन द्वारा शुरु किये गये अभियान पर बहुत कुछ कहा जा रहा है लेकिन भावर की सच्चाई पर आँख नहीं मूंदा जाना चाहिये। पहाड़ और मैदान से निकल-निकल कर भावर की भवर्योव में फंसे लोगों को यह सब झेलना ही होगा। बड़े शहर का सपना देखने वालों ने हल्द्वानी को हवा भरकर इतना फुला दिया है कि अब यह फटने को तैयार है।

बरसात में निर्वाचन आयोग के लिये चुनौती

प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव बरसात के दिनों में कराना निर्वाचन आयोग के लिये बड़ी चुनौती है। हालांकि सम्वेदनशील माने जाने वाले क्षेत्रों में आयोग ने पहले चुनाव कराने का निर्णय लिया है लेकिन मौसम के बारे में कुछ कहना कठिन है।

मौसम में जिस प्रकार का उतार चढ़ाव है उससे आशंकित होना स्वाभाविक है। पंचायतीराज मंत्री सतपाल महाराज का कहना है कि सरकार पूरी तरह तैयार है। राजकीय शिक्षक संघ के पूर्व प्रान्तीय महामंत्री मोहन माजिला ने कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिये पूर्व व्यवस्था में बदलाव के लिये कहा है।

मानसून के दिनों में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव रोक बाद में कराने की मांग भीकी जा रही है। भाजपा नेता और उत्तराखण्ड राज्य निर्माण आन्दोलनकारी सम्मान परिषद के पूर्व अध्यक्ष रविन्द्र जुगरान का कहना है कि पक्ष, विपक्ष, निर्वाचन आयोग व सभी पक्षकारों को मानूसन सीजन समाप्त होने के बाद ही चुनाव कराने पर सहमति बनानी चाहिये। जुलाई माह में बरसात से चुनाव कराने के गम्भीर खतरे हैं।

चारधाम यात्रा में चलेंगे टेंपो ट्रैवलर

देहरादून/रुद्रप्रयाग। चारधाम यात्रा, कुम्भ, मसूरी, नैनीताल के मार्गों पर रोडवेज के टेंपो ट्रैवलर चलेंगे ताकि यात्रियों को सुविधा मिल सके। परिवहन निगम ने फिलहाल 20 टेंपो ट्रैवलर खरीद की है। जिनकी ऑनलाइन बुकिंग जल्द शुरू की जाएगी। परिवहन निगम के एसडी रीना जोशी के अनुसार चारधाम यात्रा, राज्य के नागरिकों, पर्यटकों की यात्रा को और अधिक सुगम, सुरक्षित व आरामदायक बनाने के लिये बीस वातानुकूलित टेंपो ट्रैवलर वाहनों को खरीदा गया है।

इन टेंपो ट्रैवलर का संचालन विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों जैसे चारधाम यात्रा मार्ग, कुम्भ क्षेत्र, मसूरी, नैनीताल, चम्पावत, औली में किया जायेगा। बताया कि वर्तमान में पर्वतीय क्षेत्रों पर निगम के पास केवल साधारण बसें ही उपलब्ध हैं। इन टेंपो ट्रैवलर का संचालन शीघ्र ही विभिन्न पर्वतीय जिलों में किया जाएगा।

कांवड़ यात्रा में बड़े डीजे पर प्रतिबन्ध

हरिद्वार। 11 जुलाई से शुरू हो रही कांवड़ यात्रा के दौरान उत्पातियों पर सख्ती के लिये तैयारी कर ली गई है। इस दौरान बड़े डीजे बजाकर शान्ति भंग करने वालों पर निगरानी होगी और बड़े डीजे पर प्रतिबन्ध होगा।

मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने अधिकारियों को यात्रा और मेले के सुरक्षित, व्यवस्थित और सुगम संचालन के लिए सभी स्तर पर जरूरी कार्य समय से पूरा करने के लिये निर्देश दिये है। देहरादून में समीक्षा बैठक के दौरान मुख्य सचिव ने कहा कि मेले के आयोजन के लिए पेयजल, शौचालय, स्वच्छता, पार्किंग सम्बन्धी बुनियादी सुविधाएं जुटाने में किसी भी तरह की लापरवाही न हो। लापरवाही करने वाले अधिकारियों पर कार्यवाही होगी। यात्रा के दौरान नशे में लिप्त, उत्पात मचाने वालों व हिंसक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वालों पर सख्ती करने के निर्देश दिये।

इस बार 11 से 23 जुलाई तक कांवड़ यात्रा होगी। पंचक अवधि 13 से 17 जुलाई तक है।

परिक्रमा

विशेष तहसील और थाना दिवस होगा

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने निर्देश दिए हैं कि सीएम हेल्पलाइन 1905 में 180 दिन से ज्यादा समय से लम्बित शिकायतों के समाधान को विशेष अभियान चलाएं। सीएम ने समीक्षा बैठक में निर्देश दिए कि एक-एक दिन पूरे राज्य में तहसील और थाना दिवस का आयोजन करें। सीएम किसी एक जिले में औचक रूप से प्रतिभाग करेंगे।

अल्मोड़ा में कुमाऊँ महोत्सव की धूम

अल्मोड़ा। जीआईसी मैदान में आयोजित कुमाऊँ महोत्सव की धूम रही। विभिन्न क्षेत्रों से आए कलाकारों ने रंगारंग कार्यक्रम के साथ दर्शकों का मनोरंजन किया। स्थानीय कलाकारों के अलावा सांस्कृतिक दलों के द्वारा प्रस्तुति को देखने के लिये बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। अतिथि मिनिस्टीरियल एसोसिएशन के अध्यक्ष पुष्कर सिंह भैसोड़ा, प्रान्तीय उद्योग व्यापार मण्डल जिलाध्यक्ष सुशील शाह, संयोजक रवि रौतेला, राजेन्द्र तिवारी, जगदीश वर्मा, अमननाथ नेगी तमाम लोग थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

एकलव्य : आम.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

उज्ज्वल चरित्र वाले द्रोण को इतिहास ने कभी क्षमा नहीं किया है। द्रोण बोले, अपना दाएँ हाथ का अंगूठा मुझे दे दो- तमब्रवीत त्वयांगुंष्ठो दक्षिणो दीयतामिति (आदिपर्व 131.56)। द्रोण की इस लघुता, इस छोटेपन के आगे, अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए एक प्रतिभा को नष्ट कर देने के लिए इस क्षुद्रकर्म के आगे एकलव्य ने क्या किया? जो किया वह सचमुच अद्भुत था। उसने एक क्षण विलम्ब किए बिना, यह जानते हुए भी कि दायाँ अंगूठा देने का परिणाम क्या होगा, तत्काल अपना अंगूठा काट कर दे दिया। उसके बाद भी एकलव्य ने हार नहीं मानी। उसने नए सिरे से अभ्यास करना शुरू किया और अपने दाएँ हाथ की शेष उंगलियों से धनुष चलाना शुरू किया और जाहिर है कि वैसी प्रखरता उसकी धनुर्विद्या में उसके बाद नहीं आ सकी होगी जैसी अँगूठा काटने से पहले थी। उसके बावजूद एकलव्य में इतनी कुशलता तो आ ही गई थी कि उसने महाभारत युद्ध में न केवल हिस्सा लिया बल्कि कुछ दिन वह वीरतापूर्वक लड़ता भी रहा। इस युद्ध में वह कौरवों की ओर से लड़ा था।

सहस्राब्दियों की भारत-गाथा में एकलव्य एक ऐसा मीलपत्थर है जिसका महत्व इस देश के बच्चों ने तो समझ लिया है, शिक्षकों ने भी समझ लिया है, पर राजनेताओं ने नहीं। पहले तो ऐसा था और आज भी कहीं-कहीं तो ठीक ही माना जाएगा कि बच्चों को अपनी प्रारम्भिक कक्षाओं में एकलव्य की कहानी अनन्य गुरुभक्ति के आदर्श के रूप में पढ़ाई जाती थी। दुनिया में शायद भारत ही अकेला ऐसा देश है जहाँ गुरु और गुरुभक्ति का महत्व है। इस माहौल में अकेले एकलव्य का एक पाठ ही बच्चों को गुरु और गुरुभक्ति के सम्पूर्ण महत्व को बिना व्याख्या और टीका टिप्पणी के समझा देता है।

उधर द्रोण का चरित्र क्या कहता है? शायद ऐसे शिक्षकों के इस तरह के कारनामों को आदर्श न मानने की धारणा से प्रेरित होकर ही उपनिषदकार ने लिखा होगा- यानि अस्माके सुचरितानि तानि त्वया ग्रहीतव्यानि नो इतराणि। अर्थात! हे शिष्य, हमारे जो अच्छे काम हैं, उन्हीं से तुम प्रेरणा लेना, दूसरे (यानी खराब) कामों से प्रेरणा कतई मत लेना।

पर राजानेता? हमारे देश में राजनीति द्वारा समाज के सिर पर चढ़ कर अपना महत्व जताने की प्रवृत्ति चूँकि अभी नई-नई शुरू हुई है, और इस राजनीति ने समाज को तोड़कर सत्ता का ताल हासिल करने की अपनी आदत बना ली है, इसलिए एकलव्य की निर्दोष पर सशक्त सन्देशपूर्ण घटना को आज जाति और वर्ग के खाने में रखकर देखने में राजनेताओं को द्रोण एक व्यक्ति नहीं बल्कि ब्राह्मण और एललव्य एक व्यक्ति नहीं बल्कि जनजाति का प्रतिनिधि नजर आता है और फिर थ्योरी यह बन जाती है कि देखो, ये ब्राह्मण शुरू से ही अपने से नीचा समझने वालों को प्रताड़ित करते रहे हैं। ऐरसी राजनीति को न ऋषि पद को प्राप्त कवष ऐलूष नजर आता है और न ही शम्बूक जिसका प्रबल मान इसी ब्राह्मण परम्परा में हुआ है। न शबरी नजर आती है जिन्हें राम ने आदर दिया और न निषादराज गुह जिसके साथ राम ने मैत्री की। ऐसी राजनीति को न सत्यवती से कोई लेना-देना है जो कुरु-कुल राजरानी बनी और न ही विदुर से कोई तात्पर्य है जो धृतराष्ट्र के महामंत्री रहे। ऐसी राजनीति को सिर्फ तोड़ने में मजा आता है, जोड़ने वाली घटनाएं याद करने में नहीं। पर क्या देश के छात्रों और शिक्षकों को उन सभी को जो देश का कल्याण चाहते हैं ऐसे मीलपत्थर को इस तरह राजनीतिक कलुष का शिकार होने देना चाहिए?

(साभार नवभारत टाइम्स)

जुनून फुटबाल का
बिल्जू कप ग्राम तल्ला दुम्मर में रोमांच

मुनस्यारी। फुटबाल को लेकर मुन्स्यार क्षेत्र में जिस कदर जुनून है उसी का परिणाम है कि कई बेहतरीन खिलाड़ी देखने को मिल रहे हैं। पहाड़ों वैसे भी बालीबाल और फुटबला शुरू से ही प्रिय खेल रहा है।

जोहार क्लब की लम्बी खेल यात्रा के अलावा तल्ला दुम्मर में जिस प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन होने लगा है वह रोमांचक है। 'बिल्जू कप' टूर्नामेंट को लेकर क्षेत्रवासियों ने जिस तरह का उत्साह दिखाया है, उससे सभी का ध्यान इस ओर है। इस बार भी खेल का भरपूर माहौल यहाँ देखने को मिला। लगातार हुए मुकाबलों में दर्शकों ने बराबर का साथ दिया। गोगरी एफ सी टीमने रांथी ए से, रांथी बी टीम ने घोरपट्टासे, टीम होय ने भूमकापानी से, ए के स्कूनर हल्द्वानी ने बिल्जू इलेवन से मुकाबला कर अपने-अपने मैच जीते। मैचों का यह सिलसिला उद्घाटन मैच से शुरू हो गया था और इस रिपोर्ट को लिखे जाने तक दर्शक और खिलाड़ियों के बीच रोमांच का खेल चल रहा था। दरअसल खेल के अलावा बिल्जू कप का यह आयोजन इस क्षेत्र के युवाओं को संगठित करने के लिये भी जोरदार पहल है।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

पिघलता हिमालय

सदस्यों/पाठकों से

पिघलता हिमालय अपने मिशन पर हमेशा की तरह जुटा है। अपने लोक की कला, संस्कृति, इतिहास, भूगोल सहित समाज की हर भली साध साधने के लिये मुखर यह अभियान 48वें वर्ष में लगातार जारी है। इसकी सफलता के पीछे इसके सदस्य/पाठक/सहयोगी हैं।

उम्मीद है यथासमय सहयोग, सदस्यता, विज्ञापन के रूप में इसे आगे बढ़ाने में योगदान देते रहेंगे। यह केवल पत्र नहीं विचार और व्यवहार भी है अपनों से अपनों को जोड़ने का।

-व्यवस्थापक
पिघलता हिमालय

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव का बुखार पहले से चढ़ा है

हल्द्वानी। प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव को लेकर जिस प्रकार से घटनाक्रम चला आ रहा है वह सवाल खड़ा करता है। पहले हाईकोर्ट पंचायत चुनाव की आरक्षण निर्धारण प्रक्रिया का गजट नोटिफिकेशन नहीं होने और प्रक्रिया से असहमत होते हुए चुनाव पर रोक लगा दी। बाद में सुनवाई जारी रखते हुए रोक हटाते हुए नया कार्यक्रम जारी करने का आदेश दिया। चुनाव की नई तिथि तय होते ही चुनाव को लेकर दौड़धूप जारी है जबकि बुखार तो पहले से चढ़ा है।

चुनाव में मनभेद न करें : हरीश फर्स्वाण

ग्वालदम/थराली। ग्राम सभा चुनाव के अलावा ग्राम में सौपाती आयोजन भी होने जा रहा है। ग्राम के भविष्य के लिए एकता और शान्ति बनाए रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। मतभेद हो सकता है लेकिन मनभेद न करें। यह उद्गार सामाजिक कार्यकर्ता हरीश फर्स्वाण ने व्यक्त किये हैं। दरअसल चुनाव माहौल में कुछ विवादित बयानों को देख श्री फर्स्वाण ने यह कहा। इस बार उनकी पत्नी भावना फर्स्वाण पंय्या और मल्ली पंय्या से प्रधान पद की प्रबल दावेदार हैं। उनका कहना है कि चुनाव तो एक प्रक्रिया है लेकिन इसकी आड़ में किसी प्रकार की कटुता से बचें ताकि क्षेत्र में सौहार्दपूर्ण माहौल बना रहे।

मर्तोलिया के पक्ष में जुटने लगे

मुनस्यारी। पूर्व जिला पंचायत सदस्य जगह सिंह मर्तोलिया इस बार क्षेत्रा प्रमुख के प्रबल दावेदार हैं और उनके द्वारा किये गये जनहित कार्यों का उल्लेख करते हुए लगातार मंथन हो रहा है। ग्राम पंचायत जलथ, दरकोट, दुम्मर तथा ढिमढिमिया क्षेत्र से उनका निर्विरोध चयन हो इसके लिये भी बैठक आहूत की गई। श्री मर्तोलिया का कहना है कि मत उन्हें नहीं उनके विजन को दीजिए। उल्लेखनीय है कि जिस प्रकार से वह लगातार सामाजिक कार्यों में रहे हैं उससे माहौल बना है।

माइग्रेशन वाले गाँवों में दो जगह बूथ बनाने का अनुरोध : शकुन्तला दताल

जौलजीवी। समाजसेवी शकुन्तला दताल ने सरकार से अनुरोध किया है कि पंचायती चुनाव क्षेत्र हित में माइग्रेशन वाले गाँवों में दोनों जगह बूथ होना चाहिये। वह कहती हैं कि इस व्यवस्था को बनाने में प्रशासन को चाहे थोड़ा कष्ट उठाना पड़े लेकिन क्षेत्र हित में अच्छे प्रत्याशी का चयन और जनता की शत प्रतिशत मतदान में भागीदारी के लिये ऐसा होना चाहिये। दोनों जगह बूथ होने पर मतदाता अपने मत का सही निर्णय ले सकेंगे। इस पर विचार होना चाहिये।

ग्राम पंय्या और मल्ली पंय्या
के विकास का संकल्प
भावना फर्स्वाण
आइए हम सब मिलकर
ग्राम सभा के चहुमुंखी
विकास की ओर बढ़ें।
निवेदक
हरीश चन्द्र फर्स्वाण

पिघलता हिमालय स्थापना के 48वें वर्ष में
प्रवेश की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-
मोहन सिंह धर्मसक्तू
5/17 जोहार नगर
भोटिया पड़ाव,
हल्द्वानी

नगर उद्योग
व्यापार मण्डल
टनकपुर

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत
होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)